REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2023

मुंशी प्रेमचंद की दुर्दशा सामाजिक वर्चस्व और वर्ग संघर्ष का प्रतीक

गिरी दीपा व्यंकटगीर
सहशिक्षिका, जि. प. हायस्कुल, वडेपुरी, ता. लोहा, जि. नांदेड.

गोषवारा : -

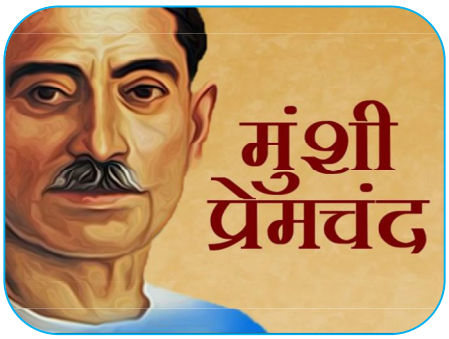

मुंशी प्रेमचंद भारत के पहले प्रगतिशील और सक्रिय लेखक थे, जिन्होंने परिणामों की परवाह किए बिना बेहद रूढ़िवादी समाज में महिलाओं के मुद्दों को स्वतंत्र रूप से और निडरता से उठाया। उनका दृढ़ विश्वास था कि महिला भारतीय समाज का केंद्रीय स्तंभ है जिस पर भारतीय समाज की संपूर्ण संरचना खड़ी है। प्रेमचंद अच्छी तरह से जानते हैं कि स्त्री और पुरुष के बीच का अंतर प्राकृतिक न होकर सांस्कृतिक है, जबकि पुरुष दोनों का आनंद लेता है और महिला एक कैदी का जीवन जीती है। इस शोध पत्र का फोकस प्रेमचंद द्वारा निर्मला के मूल्यांकन और उसमें प्रतिबिंबित महिलाओं की दुर्दशा पर है। निर्मला सर्वोत्तम क्रांतिकारी सामाजिक उपन्यास है जो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में औपनिवेशिक भारत में महिलाओं के उत्पीड़न की एक कालजयी कहानी है। उपन्यास का नायक, निर्मला भारत में सामाजिक विकृतियों और पितृसत्ता की शिकार हैं। तमाम वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बावजूद, हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जहां घड़ी की सूइयां एक महिला के चरित्र और नैतिकता का निर्धारण करती हैं। अखबार उपन्यास के माध्यम से कदम दर कदम दुखी महिला के चेहरे को आश्वस्त करने की कोशिश करता है। निर्मला मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों को व्यक्तिगत कहानियों के रूप में नहीं बल्कि महिलाओं के एक समूह की दुखद स्थिति की कहानी के हिस्से के रूप में देखा जा सकता है। प्रस्तावित अध्ययन इस तथ्य की पुष्टिकरता है कि रिश्तेदार यह माना जाता है कि संबंधित उपन्यास की नायिका सामाजिक मजबूरी के कारण अपनी नियोजित दुर्दशा की ओर प्रेरित है, न कि व्यक्तिगत पसंद के कारण। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय सामाजिक व्यवस्था की छुपी हकीकत, भारत में निम्न वर्ग के लोगों पर हो रहे अत्याचार को प्रस्तुत करना है। भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें बहुत गहरी हैं। भारतीय समाज का संविधान, अपने पदानुक्रम के साथ, उत्पीड़न की प्रथा को बेहतर ढंग से समझने के लिए एक आदर्श स्थान है। सबसे लंबे पारंपरिक भारतीय पदानुक्रम में सबसे निचला वर्ग और निचली जातियों और वर्गों के सदस्यों से संबंधित प्रेमचंद को आमतौर पर हिंदी के सबसे महान लेखकों में से एक माना जाता है। प्रेमचंद एक समाज सुधारक भी थे। उनके लेखन की एक विशिष्ट विशेषता गरीबों के शोषण की वास्तविकता को दिखाना था। उन्होंने दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया। गरीबी, साम्प्रदायिकता और भ्रष्टाचारवे बीसवीं सदी के पहले लेखक थे जिन्होंने . साहित्य में यथार्थ को प्रतिबिंबित किया।

मुख शब्द - पहचान, यथार्थवाद, सामाजिक मानदंड, परिस्थितियाँ, यौन नैतिकता, दहेज, अतुलनीय विवाह आदि। अधीनता, शोषण, सांप्रदायिक, पारंपरिक, उत्पीड़न।

परिचय : -

मुंशी प्रेमचंद की 'निर्मला', जो पहली बार में प्रकाशित हुई 1928, एक सोलह वर्षीय लड़की की मर्मस्पर्शी कहानी है, जिसका जीवन भाग्य के हाथों बदल जाता है, जब उसकी शादी एक बुजुर्ग विधुर से हो जाती है जो कि एक अप्रत्याशित जोड़ी -है। प्रेमचंद सुधारवादी रूपरेखा में विवाह संस्था और पितृसत्तात्मक समाज का मज़ाक उड़ाते हैं। निर्मला उपन्यास निर्मला नामक व्यक्ति के जीवन और गतिविधियों के इर्दगिर्द घूमता है।- नब्बे के दशक की शुरुआत में हुए परिवर्तन का दस्तावेजीकरण करें और महिलाओं के अधिकारों के इतिहास और भारतीय संस्कृति में महिलाओं की स्थिति का परिचय दें। दरअसल, यह उपन्यास निर्मला की मर्मस्पर्शी गाथा है जिसकी शादी एक बूढ़े विधुर से हुई है जिसके कई बच्चे हैं। अपने संदिग्ध पति की बेवफाई के कारण वह काफी मानसिक यातना सहती है। उपन्यास की कार्रवाई तीन परिवारों पर केंद्रित है जिनमें निर्मला आम कड़ी है। केंद्रीय पात्र, निर्मला, इन परिवारों के बीच एक सामान्य कड़ी है। उपन्यासकार द्वारा दहेज बेमेल विवाह की प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों को प्रकाश में लाया गया है, जिसका शिकार युवा निर्मला लगातार हो रही है।

विश्लेषण : -

भारतीय साहित्य में महिलाओं की स्थिति और उन्नति एक दीर्घकालिक विषय है। दुखी व्यवस्थित विवाह और दहेज के मुद्दे ने अनगिनत कहानियों और उपन्यासों को जन्म दिया। निर्मला एक उपन्यास था, एक पीड़ित महिला का क्लासिक मेलोड्रामा। यह स्पष्ट रूप से महिलाओं के अधिकारों के समर्थन में था, लेकिन जैसा कि मैं इस अध्याय में दिखाने की कोशिश करूंगा, इसने मौजूदा सामाजिक मानदंडों को सूक्ष्मता से बहाल कर दिया। जो प्रतिबंधित हैके बीच बारह 1926 और नवंबर 1925 एक महिला का जीवन निर्मला पहली बार नवंबर . भागों में प्रकाशित हुई थी। जर्नल मून मेंयह एक बड़ी सफलता थी और आज भी भारतीय साहित्य के प्रामाणिक ग्रंथों में से एक के रूप में . में 1927 इसका अध्ययन किया जाता है। यह उपन्यास'ए रिवोल्यूशनरी सोशल' उपशीर्षक के साथ उपन्यास के रूप में प्रकाशित हुआ था। निर्मला एक सफल और धनी वकील बाबू उदयभानुलाल की बेटी हैं। निर्मला के अलावा उनके तीन और बच्चे हैं, एक बेटी कृष्णा, एक बेटा चंद्रभानु और सबसे छोटा बेटा सूर्यभानु। इसलिए यह प्रथा थी कि वह निर्मला के लिए एक उपयुक्त वर की तलाश करता था और अंततः एक उपयुक्त वर ढूंढता था जिसका परिवार दहेज नहीं चाहता था। इससे पिता को काफी राहत मिलती है लेकिन बेटी, निर्मला, अपनी शादी की घोषणा के बाद शांत हो जाती है और पीछे हट जाती है। कृष्णा और निर्मला से आगे की बातचीत हुई.

वह एक काला, मोटा आदमी थाउसकी उम्र चालीस से अधिक नहीं थी ., लेकिन क़ानून की कड़ी कार्यवाही के कारण उसके बाल सफ़ेद हो गये थे। उनके पास कभी भी अधिक व्यायाम के लिए समय नहीं था, यहां तक कि वह कभी कभार ही टहलने-भी जाते थे। इन सबके फलस्वरूप उन्होंने एक पंचांग का निर्माण किया। हालाँकि वह अच्छे कद काठी का था, फिर भी उसे लगातार कोई न कोई शिकायत सताती रहती थी। बदहजमी और बवासीर इसके लगातार साथी थे। निर्मला को अपने पति के साथ कोई घनिष्ठता पसंद नहीं थी और वह उसे शारीरिक रूप से घृणित मानती थी। दूसरी ओर, तोताराम ने अपनी दुल्हन का पक्ष जीतने की पूरी कोशिश की। निर्मला को लगता है कि उसकी हताश (और उसकी)ा के कारण उसके प्रयासों पर अनुकूल प्रतिक्रिया देना असंभव है। लेकिन तोताराम खूबसूरत निर्मला पर इतना मोहित हो गया कि उसने उसे अपने घर की रानी बना लिया। तोताराम की पहली पत्नी से तीन बेटे थे। बड़ा बेटा मंसाराम सोलह साल का, जियाराम बारह साल का और सबसे छोटा सियाराम सात साल का था। तोताराम की पचास वर्षीय विधवा बहन रुक्मिणी भी उसके साथ रहती थी। निर्मला के घर में आने से पहले रुक्मिणी ही घर की पूरी देखभाल करती थी।घर में निर्मला की प्रगति से रुक्मिणी को ईर्ष्या होती थी। और भले ही लगातार कलह का यही कारण था, धीरेधीरे न-िर्मला ने घर में अपनी जगह बना ली। उसने अपने सौतेले बच्चों के साथ एक बंधन विकसित किया और उनके प्रति मातृ प्रेम से भरपूर थी। प्रेमचंद लिखते हैं:

रोमांटिक प्रेम की संभावना से निराश होकर, निर्मला का प्यासा दिल बच्चों की ओर मुड़ जाता है। एक तरह की राहत उनके .साथ समय बिताने, उनकी देखभाल करने, उनके साथ हंसने, उनके साथ खेलने से उनकी अस्वीकृत मातृ इच्छा को कुछ राहत मिली। जब भी वह समय बिताना चाहती थी, उसके पति निर्मला उसे अजीबता और शर्म की भावनाओं से अभिभूत पाते थे। इच्छा इतनी कम हो गई कि

वह भाग जाना चाहती थी। लेकिन बच्चों की सरल भक्ति ने उन्हें बहुत खुश किया। तोताराम का सबसे बड़ा बेटा मंसाराम, निर्मला के ही समान, सोलह साल का था। उसने उससे अंग्रेजी की शिक्षा लेनी शुरू कर दी और सेक्स की कमी के बावजूद दोनों में एकदूसरे के प्रति - जुनूनी प्यार विकसित हो गया। मंसाराम निर्मला को मां कहकर बुलाता था और वह अपने बच्चे की तरह उसकी देखभाल करती थी। हालाँकि, तोताराम को उनके रिश्ते से ईर्ष्या होने लगी और उसे कुछ और ही संदेह होने लगा। उसने सुंदर मंसाराम का सुर्ख रंग देखा और निर्मला की सुंदरता पर मोहित हो गया। ईर्ष्या ने दोनों को अलग करने के लिए मंसाराम को छात्रावास भेजने का फैसला किया। हालाँकि, स्कूल में कुछ तकनीकी कारणों से वह ऐसा नहीं कर सके। तोताराम दिनदिन बीमार होता जा रहा था। अंत में मंसाराम छात्रावास जाता -ब- है लेकिन वहां बहुत बीमार पड़ जाता है। लेकिन पिता की ज़िद्दी ईर्ष्याउसे अपने बेटे को वापस घर नहीं लाने देगी। तोताराम छात्रावास में अच्छी चिकित्सा देखभाल प्रदान करता है लेकिन वह अपने बेटे को घर वापस नहीं ला सकता क्योंकि उसे डर है कि उनके बीच रिश्ता फिर से बिगड़ जाएगा। दूसरी ओर, निर्मला तोताराम को घर वापस लाने की कोशिश करती है। वह यह कहकर अपनी चिंता छिपाती है कि घर पर रुक्मिणी उसकी अच्छी देखभाल कर सकती है। बीमार मंसाराम अब अपने पिता के अजीब व्यवहार और निर्मला के प्रेमहीन रवैये को देखता है। वह अपनी सौतेली माँ पर बुरी नज़र डालने के विचार से शर्म से पानीपानी हो जाता है। उसके पि-ता की अवास्तविक रूप से विकृत सोच के कारण उसकी जीवन में रुचि खत्म हो गई और उसे अपनी मृत्यु का सामना करना पड़ा। अंततः उसकी मृत्यु हो जाती है और तोताराम बिखर जाता है।

मुंशी तोताराम को जीवन में कोई रुचि नहीं रह गई थी, अब उन्हें निर्मला की निर्दोषता पर विश्वास हो गया। पहले जन्म में उनके जाने से टूटा हुआ, अपनी पोल खुल जाने के डर से वह निर्मला से अपने दिल की बात न कह सका। इसलिए चिंता और दुःख ने बिना किसी निकास के उसके शरीर को निगल लिया। उसकी कानूनी प्रैक्टिस प्रभावित होती है क्योंकि वह अपने काम में कोई दिलचस्पी नहीं लेता है। उनके मुवक्किल युवा और अधिक कुशल वकीलों की तलाश शुरू कर देते हैं। उनकी एक समय की अच्छी प्रैक्टिस ख़त्म होने लगती है और इस बार निर्मला आठ महीने की गर्भवती है। आख़िरकार निर्मला ने एक बेटी डॉकृष्णा को जन्म दिया। सिन्हा के भाई और मुंशी से . विवाहित जाली तोताराम ने अपना घर बेच दिया है। यहां से उपन्यास बहुत तेजी से आगे बढ़ता है। मुंशी तोताराम की आर्थिक तंगी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है क्योंकि साहूकार उनके दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। लेखक की टिप्पणी है, "जहां तक लड़की के जन्म की बात है, तो यह परम आपदा थी।घर लौटती है जब निर्मला ", तो उसे अपने सौतेले बेटे मंसाराम की मौत के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। लोग जियाराम और सियाराम को भी निर्मला के विरुद्ध भड़काने लगे। तनावपूर्ण स्थिति के कारण निर्मला ने यह सोचना शुरू कर दिया कि दूध और फल क्या खरीदा जाए, लेकिन इसका मतलब यह हुआ कि उसके सौतेले बच्चे भोजन से वंचित हो गए। अंततः जियाराम ने निर्मला के कुछ गहने चुरा लिए और निर्मला ने उसे अपने कमरे से बाहर निकलते हुए देख लिया। पुलिस को बुलाया जाता है और पूछताछ की जाती है, लेकिन निर्मला फिर चुप हो जाती है। यह चुप्पी उसकी प्रशंसा करने के बजाय उस पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। वह कहते हैं, ''आपको अपनी छवि बचाने की चिंता तो थी लेकिन नतीजों के बारे में नहीं सोचा.'' अंततः जियाराम पकड़ा गया

मेरी नज़रों से दूर हो जाओ वरना मैं जो भी करूँगा उसके लिए ज़िम्मेदार नहीं रहूँगा यह सब !आपका काम हैरी तरह से यह पू . आपकी वजह से है कि मैं ऐसा बन पाया हूं। छह साल पहले मेरे घर की ये हालत थी? तुमने मेरा बसाबसाया घर उजाड़ दिया-, मेरा लहलहाता बगीचा उखाड़ दिया मैं नहीं लाया। तुम मेरी पूरी दुनिया को नष्ट करने के लिए इस घर में प्रवेश करो। मैं भी ...अपने खुशहाल अस्तित्व को खुशहाल बनाना चाहता था और यही वह कीमत है जो मैं चुका रहा हूं। निर्मला, उसकी बेटी और बहन रुक्मिणी को छोड़कर, मुंशी तोताराम अपने बेटे को खोजने के लिए घर से निकलते हैं, उनके मृदुभाषी शब्दों का स्थान कठोर शब्दों और गालियों ने ले लिया है। ऐसे में उसकी सहेली सुधा उसकी विश्वासपात्र बनीएक दिन (सुधा का पति) सिन्हा .लेकिन यह दोस्ती भी तब बेकार हो जाती है जब डॉ . उसे अपने घर पर अकेला पाकर अनदेखा कर देता है। यह उसके दयनीय अस्तित्व का आखिरी झटका था और निर्मला अपने दोस्त को खोने से नहीं बच सकी। उसे बुखार हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। उसने बुरा जीवन जीया और दुर्भाग्यपूर्ण मौत मर गई। अंत में प्रेमचंद मार्मिक ढंग से लिखते हैं :"चौथे दिन, सूर्यास्त के समय, उसकी दुःख भरी कहानी समाप्त हो गई... निर्मला की आत्मा, जीवन भर संघर्ष करती रही और चतुर शिकारियों के तीरों, पंजों और हवा के झोंकों से तब तक बेरहमी से पिटती रही जब तक कि वह और अधिक

सहन न कर सकी, अपने शाश्वत घर की ओर उड़ गई। अंत में, उपन्यास के अंत में एक भयावह क्षण आता हैतोताराम को पता चलता है कि : बेटे जियाराम के साथ यह उसकी दूसरी घटना थी जिसनेनिर्मला के गहने चुराए थे और पुलिस के साथ भी ऐसा ही होने की संभावना है। अध्याय के अंत में मरने के लिए वह घर से क्यों भाग गया। निर्मला की चुप्पी, बोलने में असमर्थता, महत्वपूर्ण क्षणों में बोलने से इनकार करना, कुछ अच्छा करने और दूसरों से अलग दिखने की उसकी अत्यधिक चिंता, एक नैतिक रूप से जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में कार्य करने में उसकी लगातार विफलता ये सभी निश्चित रूप से वे संस्थाएं हैं जिन्होंने उसे बनाया है। वह जिस तरह से है और उसे उसी तरह बनाए - रखें। उन संस्थानों का विरोध करते हुए जिनमें उसे मजबूर किया गयाहै, निर्मला वास्तव में उस समाज के साथ मिली हुई है जिसने उसके साथ अन्याय किया है, शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह समझ रही है कि किस तरह से उसके साथ 'अन्याय' किया गया है। बाहरी तौर पर और सतही तौर पर छोड़कर, दूसरे शब्दों में, उसके लिए इसे असंभव बनाना, वह इतनी क्षतिग्रस्त है कि वह अपने स्तर तक गहराई तक नहीं देख सकती है। वह विकृत और अचेतन प्रवृत्ति वाली एक क्षतिग्रस्त व्यक्ति है। लेकिन उन्होंने जो किया है उसकी भयावहता को पहचाने बिना समाज और उसकी संस्थाओं की निंदा करना शायद ही संभव हैउन्होंने एक नैतिक अपं :गता पैदा की है जिसकी अत्यधिक निष्क्रियता और कायरता रोगात्मक और अनैतिक है, लेकिन जो घटनाओं के पूरे अजीब क्रम में एक अस्पष्ट रेखा को बरकरार रखती है। गुण।

निर्मला निष्क्रियता की राक्षसी है जो सोचने और कार्य करने में असमर्थता के कारण एक व्यक्ति बन जाती है। व्यक्ति उसी 'मर्दाना' दुनिया को नष्ट कर देता है जिसने उसे वह बनाया है जो वह सरल और निर्दयी है, यह इस बात पर जोर देने लायक है कि वह जिस चीज से बनी है वही बनी रहे। जिस सामाजिक हिंसा की प्रेमचंद निर्मला की आलोचना करते हैं उसका सही माप निर्मला की किशोर मासूमियत में नहीं पाया जा सकता। उसकी दर्दनाक शादी से पहले, या उस 'मासूमियत' में भी जो निर्मला की खोज के रूप में जीवित है। निष्क्रिय मासूमियत की स्थिति, यहाँ तक कि उसके कार्य करने से इनकार करने पर भी उसके आसपास की हर चीज़ नष्ट हो जाती है। प्रेमचंद हिंदी - के सबसे प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं और गोदान प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास है। उत्तरी गांवों में आर्थिक और सामाजिक संघर्ष स्वतंत्रतापूर्व - ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति को गहराई से दर्शाता है, जिनकी विशेषता गरीबी, अज्ञानता और अमीरों द्वारा अशिक्षित किसानों का शोषण था। मकान मालिक लेकिन हालात उम्मीद के मुताबिक नहीं बदले हैं और निम्नवर्गीय स्थिति होरी के परिवार के जीवन, अस्तित्व और आत्म-सम्मान को पूरी तरह से नहीं बदल सकती। होरी अपने जीवन को सफल बनाने के लिए एक गाय खरीदने के लिए सब कुछ करता है। उस समय की हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि वह उन्हें एक गाय दान करते थे। मरने से पहले ब्राह्मण उसे मोक्ष प्राप्त करने में मदद करेगा। स्वतंत्रतापूर्व भारत का एक आकर्षक परिचय-, गोदान एक ग्रामीण नृवंशविज्ञान, एक गतिशील मानव दस्तावेज़ और औपनिवेशिक इतिहास की समझ भी है।

प्रेमचंद का गोदान, अंग्रेजी में अनुवादित और में प्रकाशित पहला हिंदी उपन्यास 2010, पश्चिम भारतीय प्रगति में आर्थिक और सामाजिक बाधाओं को दर्शाता है। जब होरी कहता है, "ईश्वर ने उन्हें स्वामी बनाया है और हम उनके दास हैं। ये पंक्तियाँ शायद ही कभी सबाल्टर्न अधीनता और हेरफेर के लक्षण प्रदर्शित करती हैं। क्रूर आर्थिक और राजनीतिक उत्पीड़न से सबाल्टर्न अलगथलग पड़ गए हैं - और कुचल दिए गए हैं। एक ओर होरी की तरह खेतों में काम करके अपने परिवार के लिए भोजन तैयार करनेवाले लोग हैं और दूसरी ओर अमीर लोग हैं . गोदान ग्रामीण भारत की सामाजिकस्कृतिक स्थितियों का अनुकरण करता है। दाता दीन ब्राह्मण जाति का प्रतिनिधित्व सां- दलित हैं। उसने अपने धार्मिक अधिकार से निचली जाति के ग्रामीणों पर अत्याचार किया। होरी और भोल-करते हैं और गैर ा समाज के निचले वर्ग के थे। प्रेमचंद जमींदार द्वारा उत्पीड़ित निचली जाति के लोगों का प्रतिनिधि चित्र चित्रित करते हैं। किसान समय पर ऋण नहीं चुका पाता और दोगुने डाउन पेमेंट के साथ यह बढ़ जाता है। लेखक ने भारत में सामंती व्यवस्था को ख़त्म करने का प्रयास किया। गाँव के हर किसान की सबसे बड़ी समस्या कर्ज थी। प्रेमचंद ने समाज से धन चढ़ाने की प्रथा को हटाने का प्रयास किया। यह उपन्यास गाँव की राजनीतिक व्यवस्था को भी उजागर करता है। उन्होंने ग्रामीण जीवन को शहरी जीवन के साथ जोड़ा।

Hori's उनके काम का एक प्रतिनिधि संग्रह है। यह भारतीय भूमि का मूल निवासी है। होरी केवल एक व्यक्ति नहीं है; यह एक ऐसे वर्ग का उदाहरण है, जिसके गुण और दोष इसमें समान हैं। उसके लिए आत्माएँ और प्रकृति ही एकमात्र वास्तविक चीज़ें हैं। यथार्थवाद

उनके जीवन का आधार है। वह गोबर के कॉग्नोसेंटी में विश्वास नहीं करता है, जो कि बहुत अच्छी तरह से हो सकता है, लेकिन तैयारी में नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि होरी के वंशजों ने ऐसा व्यवहार नहीं किया था। गोबर कहता है, ईश्वर ने हम सबको एक जैसा बनाया है। उनका मानना है कि जो लोग गरीब पैदा होते हैं, उन्होंने अपने पिछले कर्मों से अच्छा जीवन नहीं कमाया है, जबकि जो लोग अमीर पैदा होते हैं। अतीत होरी की एकमात्र असहमति है; यह इसका एकमात्र शीटवह चीजों पर विश्वास करता है .एंकर है-, वह कार्य करता है, वह ठीक वैसे ही कार्य करता है जैसे उसके पूर्वजों ने किया था और क्योंकि वे भी वश में थे। उसके पास वार्षिक में मूर्ति की वेदी पर चढ़ाने के लिए "कथा" बहुत सारा पैसा नहीं है, एक रुपया भी नहीं है और उसे पछतावा है, इसलिए नहीं कि वह दुर्भाग्यशाली है बल्कि इसलिए कि वह कथा में कुछ भी नहीं चढ़ा सका, उसका घुन परमेश्वर की वेदी पर, जिससे वह वास्तव में डरता है।

मुख्य पात्र होरी अपनी जाति के लिए खड़े होने के लिए कोई भी गरीबी सहने या कोई भी न्याय करने के लिए तैयार है। वे कहते हैं कि गाँव की सभा भगवान की वाणी है, वे क्या सोचते हैं यह जानना चाहिए। ख़ुशी से होरी अपना भोजन, अपने बैल और अंततः अपना घर दे देता है ताकि वह गाँव में खड़े होकर उसकी रक्षा कर सके। उसका बेटा अंततः अपनी निचली जाति का अपमान सहन नहीं कर पाता और उसके पिता अपने लिए खड़े होने में असमर्थ हो जाते हैं। होरी की पत्नी भी विरोध करती है लेकिन होरी उसकी बात को अनसुना कर देता है। जाति के बाहर उनका कोई जीवन नहीं हैके का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है निर्धारित तरी-कुछ राजघराने ऐसे हैं जिन्हें पूर्व . होइर जानता है कि जाति से बाहर रहने का मतलब कोई ऋण नहीं, कोई सामुदायिक सहायता नहीं, कोई मृगतृष्णा समारोह नहीं और कोई अंत्येष्टि नहीं। होरिसन गोबर, जो गांव और जाति छोड़कर चला गया, एक ही मुद्दा है 'द गिफ्ट ऑफ काउ टू' जीत गई।

जाति व्यवस्था इतनी शक्तिशाली है कि जो व्यक्ति इससे पूरी तरह टूट जाता है, उसे ही इस व्यवस्था से सच्ची आजादी नहीं मिल पाती है। जाति व्यवस्था की ताकत उसकी स्वयं को लागू करने वाली प्रकृति है। औसत भारतीय किसान ऊंची जातियों के ख़िलाफ़ विद्रोह नहीं कर सकता क्योंकि व्यवस्था ख़त्म हो जाती है और विद्रोह को सभी सामाजिक समर्थन कम हो जाते हैं। होरी जरा भी विद्रोह न कर सका। हालाँकि उसने अपनी गरिमा और सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया है, लेकिन वह खड़े होकर मर जाता है, किसी से नहीं लड़ता। गोबर दोनों दुनियाओं के बीच सबसे महत्वपूर्ण बंधन था। वह शहर गया और शहरी जीवन के बारे में सीखा। वह गांव लौट आए और जमींदारों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने ग्रामीणों को राजनीतिक व्यवस्था के बारे में भी जागरूक कियादिखाया गया है जो परिस्थितियों का शिकार है और सारी संपत्ति का मालिक है। होरी को एक साधारण गरीब किसान के रूप में . एक आम आदमी में कमियां होती हैं लेकिन इसके बावजूद वह समय पड़ने पर अपनी अच्छाइयों, जिम्मेदारियों और फैसले पर कायम रहता है। गोबर को लखनऊ शहर में अनुभव मिलता है और वह व्यावहारिक और सांसारिक होना सीखता है। प्रेमचंद ने गाँव के जमींदारों और भौतिकवादी साहूकारों द्वारा शोषित गरीब किसानों का यथार्थवादी चित्र चित्रित किया है। जमींदारों ने राजस्व कमाया और जुर्माना लगाया। राय साहब ने होरी पर जुर्माना लगाया कि गाय मर भी जाये, तो उसे मत मारो। सभी किसान समय पर कर्ज नहीं चुका पाते और समय के साथ यह बढ़ता जाता है। गोबर एक समाजवादी नेता के रूप में उभरे और साहूकारों और किसानों को गुलाम बनाने वाली व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष के लिए लोगों को संगठित किया। गोबर उस व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है जिसने किसानों को पीड़ित किया और उन्हें गोबर के खिलाफ आवाज उठानी पड़ी। इसके बजाय, अब वह गांव और शहर ए के गरीब आज्ञाकारी मजदूरों से नफरत करता है, जहां सबसे पहले, वह अपने लिए जगह बनाता है। वह कुछ पैसे कमाता है और साहूकारों द्वारा वसूले जाने वाले मूल्य से अधिक दर पर दूसरों को उधार देता है, गोबर घबरा जाता है। प्रेमचंद की कृतियों में होरिस सबसे यथार्थवादी मुखपत्र है। कठिन परिस्थिति से बाहर निकलने के लिए उन्होंने अपनी बेटी रूपा को एक बूढ़े विधुर के पास स्वीकार कर लिया। उनका घर पहले से ही गिरवी है , दाता दीन अपने पैसे वापस मांगता है, जबकि होरी के पास कुछ भी नहीं है। उनकी ज़मीन, जो किसानों की जान से भी ज़्यादा है, छिन जाने का ख़तरा है। हालाँकि गोबर को इस बात का पछतावा है कि जब तक उसे अपनी बहू से उधार लिए पैसे वापस मिलेंगे, होरी को लगता है कि उसके साथ कुछ भी गलत नहीं हुआ है, और इस घटना ने उसके अंत को जल्दी कर दिया।

प्रेमचंद का उपन्यास परिवार में महिलाओं के स्थान और समाज के ध्यान तथा उपन्यास के केंद्रीय विषय पर केंद्रित है। मिस मालती, एक डॉक्टर और समाज सुधारक जो इंग्लैंड लौट आईं। वह उत्साही है और राय के मामले में पुरुष के साथ समानता और समाज में

समान दर्जा चाहती है। वह प्रोफेसर मेहता के संपर्क में आती है, जो शायद प्रेमचंद के मुखपत्र और लेखक के संकेतों के लिए व्याख्या में कहता है कि वह उससे प्यार करती है और अंततः अपने मानकों के बारे में सब भूल जाती है। धनिया और ज़ुनिया जैसी महिलाओं का पितृसत्तात्मक समाज द्वारा शोषण किया जाता था। उन्हें बोलने की आज़ादी भी नहीं मिलीसमाज में उनका क्रूरतापूर्वक दमन किया जाता . है। प्रेमचंद को भारत का आधुनिक लेखक माना जाता है। जहां प्रेम और अंतरजातीय विवाह पनपेगा। गोबर और ज़ूनिया, मेहता और मिस मालती का अंतरजातीय विवाह प्रेम और करुणा के मुद्दे पर एक गंभीर विचारोत्तेजक चर्चा है। वे आधुनिक भारत की आवाज प्रस्तुत करते हैं और परस्पर अपनेअपने समुदायों में समाज की सेवा करने वाले मित्र के रूप में रहने का- निर्णय लेते हैंगोबर ने भौंहें चढ़ा लीं। कौन कहता . री खो देनी चाहिएहै कि हमें ईमानदा? कोई भी हमें ब्राह्मणों से धन उगाही करने का सुझाव नहीं देता। मैं बस इतना कह रहा हूं कि हम वह सारा ब्याज नहीं चुकाएंगे।' बैंक बारह आने ब्याज लेते हैं आप उन्हें एक रुपया ब्याज लेने दें। वह और कितना लूटना चाहता है? गोबर ने शहर जाकर शहरी जीवन के बारे में जाना। वह गाँव वापस आए और ग्रामीणों को जागरूक किया।उन्होंने ग्रामीणों को भ्रष्टाचार और जाति व्यवस्था के बारे में जागरूक किया। होरी की बुराइयाँ निचले लोग बताते हैं। वह तब लड़ता है जब उसकी पत्नी चाहती है। लेकिन वह उसके प्रति वफादार हैपरेशानियों का असली कारण हीरा है। होरी की मृत्यु से एक दिन पहले जब वह वापस लौटता है होरी की सभी ., तो हीरा के प्रति होरी के निश्छल प्रेम में कोई बदलाव नहीं आता है। होरी उसे कोई समस्या नहीं मानता। प्रेचंद ने किसानों की पीड़ा का चित्रण किया है जो उन दिनों आम बात थी। अंतिम दिनों में उसने ईश्वर की उपस्थिति में विश्वास खो दिया, क्योंकि ईश्वर में विश्वास का अर्थ उसकी दया में विश्वास भी है।

प्रेमचंद ने उपन्यास, लघु कथाएँ, निबंध और बच्चों की कहानियाँ लिखीं। जब उनका पहला काम प्रकाशित हुआ तो उसे अपने समय का सर्वोच्च पुरस्कार मिला। वह वर्तमान में भारत के सबसे दिलचस्प लेखकों में से एक हैं। उनके प्रमुख उपन्यास गोदान, निर्मला और गबन हैं। उनकी रचनाओं का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके कार्यों को भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों में शिक्षाविदों द्वारा पढ़ाए जाने वाले हिंदी और उर्दू में पढ़ाया जा रहा है। उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर लिखा और ऐसे तत्व जोड़े जिससे सामाजिक विवेक और जिम्मेदारी की भावना पैदा हुई। उन्होंने आम लोगों के जीवन और विभिन्न समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया। उन्होंने ग्रामीण भारत और जमींदारों और साहूकारों के हाथों के शोषण पर ध्यान केंद्रित किया। प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में यथार्थवाद लाया और उस दौर में साहित्य में बदलाव आया जो क्रांतिकारी था। प्रेमचंद का प्रारंभिक साहित्य शानदार और कल्पना से भरपूर था। वह एक समाज सुधारक और दूरदर्शी थे जिन्होंने भारतीय समाज में मौजूद सामाजिक बुराइयों के बारे में लिखा। उनकी कहानियाँ ग्रामीण भारत से हैं जो मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण है। उपन्यासकार और लेखक होने के साथसाथ प्रेम चंद एक समाज सुधारक भी थे।- गरीबों के शोषण के रूप में उन्होंने जिस वास्तविकता को चित्रित किया, वह उनके लेखन की एक विशिष्ट विशेषता थी। उन्होंने दहेज, गरीबी, जातिवाद और भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक बुराइयों को संबोधित किया। वे बीसवीं सदी के पहले लेखक थे जिन्होंने साहित्य में यथार्थ को प्रतिबिंबित किया।

निष्कर्ष :-

प्रेमचंद ने यह उपन्यास उस समय लिखा था जब महिलाओं कीभूमिका को नई वास्तविकता के अनुसार पुनर्परिभाषित किया जा रहा था।

इस नामांकित उपन्यास की नायिका निर्मला, बीसवीं सदी की शुरुआत में हिंदू पितृसत्ता पर आधारित है। और यह दर्द देता है। पीड़ित महिला का प्रेमचंद का चित्रण बीसवीं सदी के शुरुआती शतक उपन्यास की अपेक्षित तर्ज पर है, जहां वह खुद को एक लेखक के रूप में प्रकट करते हैं जो निर्मला के दर्द को संवेदनशील रूप से चित्रित करता है, लेकिन शक्तिशाली, पितृसत्तात्मक मानसिकता पर सवाल उठाता है जो उसकी पीड़ा का कारण है। निर्मला में उन्होंने मुख्य रूप से सामाजिककोण से महिलाओं के मुद्दों पर ध्यान केंद्रितआर्थिक दृष्टि- किया। निर्मला ऐसे ही घृणित दुर्व्यवहार का शिकार है। उसने पुरुष दुर्व्यवहार सहा है और उसका जीवन संदेह उपेक्षा और क्रूरता से अंधकारमय हो गया है। मुंशी प्रेमचंद उस सामाजिक संगठन के सख्त विरोधी थे जो उन्हें सामाजिक संरचना में विभिन्न स्तरों में विभाजित करता था। प्रेमचंद कहते हैं कि दहेज प्रथा और बेमेल विवाह की सामाजिकराजनीतिक बुराई से छुटकारा पाने के लिए एक सामाजिक -

क्रांति की जरूरत है। निर्मला देश की वंचित महिलाओं, पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ती है। यह भौगोलिक भिन्नताओं और दूरियों की सभी मानव निर्मित सीमाओं को पार करता है क्योंकि हर महिला अपना खुद का एक कमरा चाहती है। निर्मला सभी अर्थों और सार में महिलाओं की दुखद दुर्दशा का उदाहरण प(कमजोर/मजबूत)्रस्तुत करती है।

मुंशी प्रेमचंद ने पीड़ित समाज की आवाज उठाई और उस पर लेखन किया। वह एक समाज सुधारक और रचनात्मक विचारक हैं। वह समाज में मौजूद सामाजिक समस्याओं के बारे में लिखते थे। उनकी कहानियाँ ग्रामीण भारत की संपूर्ण मानवीय भावना का चित्रण करती हैं। उपन्यासकार और लेखक के अलावा प्रेमचंद एक समाज सुधारक भी थे। उनके लेखन की एक उल्लेखनीय विशेषता वह सच्चाई है जिसके साथ उन्होंने गरीबों के शोषण का चित्रण किया है। उन्होंने दहेज, अभाव, जातिवाद, रिश्वतखोरी जैसी सामाजिक समस्याओं पर संदेश दिया। वह साहित्य में प्रामाणिकता लाने वाले पर लिखना शुरू किया वीं सदी के पहले उपन्यासकार थे। उन्होंने सामाजिक मुद्दों20 और सामाजिक विवेक और जिम्मेदारी की भावना पैदा की। उन्होंने आम लोगों के जीवन और उनके सामने आने वाली विभिन्न असुविधाओं का यथार्थवादी चित्रण किया। उन्होंने देहाती भारत और जमींदारों तथा साहूकारों के हाथों इसके दुरुपयोग पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित किया।

संदर्भ

1. गोपाल, मदन) .1964).मुंशी प्रेमचंदएक साहित्यिक जीवनी। मुंबई। एशिया पब्लिशिंग हाउस। :
2. मिश्रा, शिवकुमार) .1986).प्रेमचंद हमारा समकालीन नई दिल्ली। नेशनल .पब्लिशिंग हाउस।
3. मुखर्जी, मीनाक्षी) .2005)।यथार्थवाद और वास्तविकतानई दिल्ली।:में उपन्यास और समाज। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस भारत :
4. प्रेमचंद, मुंशी) .1999)। निर्मलाद्वारा अनुवादित और उपसंहार के साथ। (ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस) अलोकराय .
5. राय, अमृत) .1982)। प्रेमचंदपब्लिशिंग हाउसपीपुल्स :नई दिल्ली .हरीश त्रिवेदी .ट्रांस .एक जीवन :,